मधुबन ओम् शान्ति अंक 365 दिसम्बर 2022

पत्र-पुष्प

"सच्चाई और सफाई को धारण कर सच्चे साहेब को राजी करो"
दादी जी की शुभ प्रेरणायें 23-11-22

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अपने दिल में दिलाराम बाप को बिठाने वाले, एकनामी और बुद्धि की स्वच्छता द्वारा सच्चाई और सफाई को धारण कर सच्चे साहेब को राज़ी करने वाली, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - समय प्रमाण बापदादा का विशेष इशारा है कि बच्चे परमात्म मदद का, दुआओं का और उनकी शक्तियों का अनुभव करने के लिए दिल सदा सच्ची और साफ हो। बुद्धि की लाइन क्लीन और क्लीयर हो। अब बेहद के सेवाधारी बन फ्राकदिल, उदारचित होकर अपने सर्व प्राप्ति के खजानों को बाँटना है, सेवा की लगन के साथ विघ्न-विनाशक भी बनना है। सच्ची दिल से साकार, आकार और निराकार तीनों रूपों में बाप के साथ का अनुभव करना है। अन्तिम समय प्रमाण अनेक प्रकार के हिसाब-किताब, शरीर के कर्मभोग के रूप में, स्वभाव-संस्कार के रूप में सामना करते हैं, लेकिन जितना याद की यात्रा को शक्तिशाली बनायेंगे, निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी बनकर मन-बुद्धि से बिजी रहेंगे उतना पुराने सब हिसाब सहज चुक्तू होते जायेंगे। कोई भी कमी कमजोरी का अधिक चिंतन या वर्णन करने से वह छोटी सी बात भी बड़ी बन जाती है इसलिए दिल की महसूसता से सब कुछ बाप के आगे स्पष्ट कर हल्के होकर रहो। तो संगमयुग की सर्व प्राप्ति सम्पन्न जीवन का अनुभव करते, अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहेंगे।

हम सब देख रहे हैं वर्तमान समय चारों ओर भय वा दु:ख का वातावरण बढ़ता जा रहा है, ऐसे वातावरण में सदा निर्भय और हिम्मतवान बनना है। हर आत्मा के प्रति रहम की भावना से सहयोगी बनना है। खुद भय में नहीं आना है। कहते हैं भय ही सबसे बड़े से बड़ा भूत है। सिर्फ मरने का ही भय नहीं होता, अपनी कमजोरियों के कारण भी भय होता है। उन सबमें निर्भय बनने का सहज साधन है, साफ दिल, सच्ची दिल। बोलो, मीठे मीठे भाई बहिनें, अपनी ऐसी श्रेष्ठ स्थिति द्वारा भय व चिंता मुक्त बन हर परिस्थिति को पार करते हुए सदा अचल-अडोल एकरस स्थिति का अनुभव कर रहे हो ना!

अभी तो नया वर्ष समीप आ रहा है। ब्रह्मा बाप की स्मृति का यह जनवरी मास सबको अपनी अव्यक्त स्थिति बनाने के लिए विशेष इशारा देता है। जरूर हर एक योग की गुफा में रह गहरी साइलेन्स की अनुभूति करेंगे। इससे सम्बन्धित बड़ी दादी जी का एक क्लास आपके पास भेज रहे हैं। जरूर सभी उस पर अटेन्शन देना और 101 दिन के लिए अशरीरी स्थिति का अनुभव करने का विशेष प्रोग्राम बनाना जी।

बाकी देश विदेश के हजारों बाबा के बच्चे बाबा के मधुबन घर में रिफ्रेश होने के लिए पहुंच रहे हैं। बाबा अव्यक्त वतन से अपने बच्चों को अपनी सूक्ष्म सकाश द्वारा भरपूर कर रहे हैं। यह अलौकिक मिलन महफिल भी दिल को कितना आकर्षित करने वाली है। अच्छा!

आप सबकी तबियत ठीक होगी। सेवाओं के विस्तार में जाते भी अपनी सार स्वरूप शक्तिशाली स्थिति बनाने के लिए समय निकालकर विशेष तपस्या करनी है। अच्छा!

सभी को बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद..

ईश्वरीय सेवा में,
वी. के. रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

सच्चे दिल से साहेब को राज़ी कर परमात्म दिलतख्तनशीन बनो

1) सच्चे साहेब को राज़ी करने के लिए विशेष अटेन्शन रखो - सच्ची दिल, कोई भी बात अन्दर है तो सच्ची दिल से, महसूसता से बापदादा के आगे रखो। बापदादा के आगे महसूस करेंगे तो दिल खाली हो जायेगी, किचड़ा खत्म हो जायेगा। अगर दिल खाली नहीं है तो दिलाराम कहाँ बैठेगा।

2) सच्ची दिल से कहो बाबा जो हूँ, जैसी हूँ, आपकी हूँ। इसके साथ बुद्धि की लाइन क्लीयर चाहिए। लाइन में कोई भी डिस्ट्रबेन्स नहीं हो, कटआफ नहीं हो। बापदादा जो एक्स्ट्रा समय पर शक्ति देने चाहते हैं, दुआयें देने चाहते हैं, एक्स्ट्रा मदद देने चाहते हैं, अगर डिस्ट्रबेन्स होगी तो वह मिल नहीं सकेगी इसलिए दिल सच्ची और साफ हो, कोई भी छोटी-मोटी बातों का किचड़ा दिल में न हो।

3) कहावत है सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। सच्ची दिल वाले परमात्म दिलतख्तनशीन बन जाते हैं। सच्ची दिल से दिलाराम बाप को अपना बना लेते हैं। दिलाराम बाप सच्ची दिल के सिवाए सेकण्ड भी याद के रूप में कहाँ ठहर नहीं सकते। भोले भक्त तो भगवान को कण-कण में ढूँढते रह गये लेकिन भोलेनाथ के भोले बच्चों ने उसे पा लिया। बड़े दिमाग वालों ने नहीं पाया लेकिन सच्ची दिल वालों ने ही पाया।

4) सच्चे दिल की सेवा स्वयं में खुशी और शक्ति का अनुभव कराती है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी तब होता है जब बेहद के सेवाधारी बन फ्राकदिल, उदारचित होकर प्राप्ति के खजानों को बाँटते हैं। सेवा की लगन का फल, विघ्न सहज ही विनाश हो जाते हैं। विघ्नों को हटाने में समय नहीं देना पड़ता। सच्ची दिल वाले बच्चे सहज ही साकार, आकार, निराकार तीनों रूपों में बाप के साथ का अनुभव करते हैं क्योंकि उन पर साहेब राज़ी रहता है।

5) जो सच्ची दिल से यज्ञ सेवा करते हैं उन्हें एक सेकण्ड की सेवा का भी बहुत फल मिलता है, जो फल 21 पीढ़ी तक खाते रहेंगे इसलिए सेवा में सदा बिजी रहो। मंसा से शुद्ध संकल्प की सेवा करो, सम्पर्क-सम्बन्ध वा वाणी द्वारा बाप का परिचय देने की सेवा करो। जो बच्चे मुहब्बत से सच्ची दिल से कमाते और सेवा में लगाते हैं उनका ही सफल होता है। उन पर साहेब राज़ी होता है।

6) दिलाराम बाप को सच्ची दिल वाले बच्चे ही पसन्द हैं। दुनिया का दिमाग न भी हो लेकिन बाप को दिल वाले पसन्द हैं। दिमाग तो बाप इतना बड़ा दे देता है जिससे रचयिता को जानने से रचना के आदि, मध्य, अन्त की नॉलेज जान लेते हो, नम्बर भी बनते हैं सच्ची साफ दिल के आधार से। सेवा के आधार से नहीं। सेवा में भी सच्ची दिल से सेवा की वा सिर्फ दिमाग के आधार से सेवा की! दिमाग वाले नाम कमाते हैं, दिल वाले दुआयें कमाते हैं।

7) बापदादा सच्ची दिल पर राज़ी है, तीव्र दिमाग वालों पर नहीं। तो दिल का अनुभव दिल जाने, दिलाराम जाने। समाने का स्थान दिल कहा जाता है, दिमाग नहीं। नॉलेज को समाने का स्थान दिमाग है, लेकिन माशूक को समाने का स्थान दिल है। जो दिल के स्नेह से याद नहीं करते, सिर्फ नॉलेज के आधार पर दिमाग से याद करते वा सेवा करते, उन्हों को मेहनत ज्यादा करनी पड़ती, सन्तुष्टता कम होती है।

8) हर समय सेवा की विधि के महत्व को जानकर महान् बनो, जितना भाषण करने वाला पद पा लेता है उतना योगयुक्त, युक्तियुक्त स्थिति में स्थित रहने वाला 'बर्तन मांजने वाला' भी श्रेष्ठ पद पा सकता है। सिर्फ याद रखो – सच्ची दिल पर साहेब राज़ी होता है और जब दाता, वरदाता राज़ी हो गया तो क्या कमी रहेगी! वरदाता वा भाग्यविधाता ज्ञान-दाता भोले बाप को राज़ी कर लो तो माया से भी बच जायेंगे और धर्मराज काज़ी से भी बच जायेंगे।

9) जो सच्ची दिल से दिल का समाचार बाप के आगे रखते हैं, तो सच्ची दिल पर बाप सदा राज़ी है इसलिए दिल के समाचार में जो भी कोई छोटी-छोटी बातें आती हैं, वह बाप की विशेष याद के वरदान से समाप्त हो ही जायेंगी। बाप का राज़ी होना अर्थात् सहज बाप की मदद से मायाजीत बनना। विशाल दिमाग वाले ज्ञान की प्वाइंट्स को अच्छी तरह धारण कर सकते हैं, प्वाइंट्स रिपीट कर सकते हैं लेकिन दिल से याद करने वाले प्वाइंट अर्थात् बिन्दू रूप बन सकते हैं।

10) सच्ची दिल वाले बच्चों को विशेष बाप की दुआयें प्राप्त होने कारण समय प्रमाण उनका दिमाग युक्तियुक्त, यथार्थ कार्य स्वत:

ही कर लेता है क्योंकि यथार्थ कर्म, बोल वा संकल्प होने कारण समय प्रमाण वही टचिंग उनके दिमाग में आयेगी क्योंकि बुद्धिवानों की बुद्धि (बाप) को राज़ी किया हुआ है, जिसने भगवान को राज़ी किया वह स्वत: ही राजयुक्त, युक्तियुक्त होता है।

11) ब्राह्मण जीवन में विशाल दिमाग भी चाहिए तो सच्ची दिल भी चाहिए। सच्ची दिल वाले को दिमाग की लिफ्ट स्वत: मिल जाती है इसलिए सदा यह चेक करो कि सच्ची दिल से साहेब को राज़ी किया है! सिर्फ अपने मन को या सिर्फ कुछ आत्माओं को राज़ी नहीं करना है। सच्चे साहेब को राज़ी करना है तो अलबेलेपन का चश्मा उतारकर स्व-उन्नति का यथार्थ चश्मा पहनकर रहो।

12) जो बच्चे स्व-पुरुषार्थ का सच्चा समाचार देते हैं उन पर बाप राज़ी रहता है लेकिन स्वयं भी स्वयं के संस्कारों से, संगठन से राज़युक्त अर्थात् राज़ी रहो। एक-दो के संस्कारों के राज़ को, परिस्थितियों को जानकर चलो, यही राज़युक्त स्थिति है। बाकी सच्चे दिल से अपना पोतामेल देते हो तो पिछला खाता समाप्त होता है और स्नेह की रुहरिहान सदा समीपता का अनुभव कराती है।

13) कोई भी काम अगर खुशी-खुशी से करके कमाई करते हो तो वह पैसा भी खुशी दिलायेगा। वह दो रुपया भी दो हजार का काम करेगा और वह दो लाख दो रुपये का काम करेगा। सच्ची दिल वालों की कमाई भी सच्ची होती है। उन्हें दाल-रोटी जरुर मिलती है। सुस्त रहने वाले को नहीं, काम तो करना ही पड़ेगा, लेकिन वह काम खुशी से योगयुक्त होकर करो तो कमी नहीं पड़ेगी। चिंता नहीं होगी।

14) साहेब को राज़ी करने के लिए दिल की स्वच्छता चाहिए, इसलिए कहते हैं सच्चाई ही सफाई है। अपने स्व-उन्नति अर्थ जो भी पुरुषार्थ है, जैसा भी पुरुषार्थ है, वह सच्चाई से बाप के आगे रखना, यह है स्वयं के पुरुषार्थ की स्वच्छता। दूसरा – सेवा करते सच्ची दिल से कहाँ तक सेवा कर रहे हैं, उसकी स्वच्छता। अगर कोई भी स्वार्थ से सेवा करते हो तो उसको सच्ची सेवा नहीं कहेंगे। इतने मेले कर लिये, इतने कोर्स करा लिये लेकिन स्वच्छता और पवित्रता की परसेन्ट कितनी रही? ड्यूटी नहीं है लेकिन सेवा निज़ी संस्कार है, स्व-धर्म है, स्व-कर्म है।

15) बाप को सच्ची दिल प्यारी लगती है। जो गांव वाले भोले बच्चे हैं उन्हें झूठ-कपट करने नहीं आता। चालाक, चतुर जो होते हैं उन्हें यह सब बातें आती हैं। तो जिसकी दिल भोली है अर्थात् दुनिया की मायावी चतुराई से परे हैं, वह बाप को अति प्रिय हैं। बाप सच्ची दिल को देखता है। बाकी पढ़ाई को, शक्ल को, गाँव को, पैसे को नहीं देखता है। सच्ची दिल चाहिए, इसलिए बाप का नाम दिलवाला है।

16) कोई-कोई बच्चे बापदादा को अपना सच्चा समाचार देते हैं, सच बताने में कभी डरते नहीं, छिपाते नहीं। ऐसी सच्ची दिल वाले बच्चे बाप के डबल प्यार के पात्र हैं। जब कोई बात बाप को सुना दी, तो उसे अपने अन्दर बार-बार रिपीट नहीं करो, वर्णन नहीं करो – ये हो गया, ये हो गया....। हो गया, फिनिश। आगे के लिये अटेन्शन दो तो वह बात सदा के लिए समाप्त हो जायेगी।

17) कभी कोई भी शारीरिक बीमारी हो, मन का तूफान हो, तन में हलचल हो, प्रवृत्ति में हलचल हो, सेवा में हलचल हो, किसी भी प्रकार की हलचल में दिलशिकस्त कभी नहीं होना। जैसे बाप बड़ी दिल वाले हैं, ऐसे बड़ी दिल वाले बनो। अगर कोई हिसाब-किताब आ भी गया, दर्द आ गया। उसमें दिलशिकस्त होकर बीमारी को बढ़ाओ नहीं। हिम्मत वाले बनो तो बाप भी मददगार बनेंगे। मन में जब कोई भी उलझन आती है तो ऐसे समय पर निर्णय शक्ति चाहिये और निर्णय शक्ति तब आ सकती है जब आपका मन बाप की तरफ हो, दिल में सच्चाई हो, इसलिए किसी भी प्रकार की उलझन में दिलशिकस्त कभी नहीं बनो।

18) जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं तो कैसी भी हालत में बापदादा उन्हें दाल-रोटी जरूर खिलायेगा। ऐसे नहीं कि काम से थक करके बैठ जाओ और कहो बाबा दाल-रोटी खिलायेगा। ऐसे अलबेले या आलस्य वाले को नहीं मिलेगा। बाकी सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। अभी सब अति में जा रहा है और जाना है। बातें तो अनेक आयेंगी लेकिन आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति ले हल करो। पहले बिल्कुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरे को तेरे में परिवर्तन कर दो तो बाप की टचिंग आयेगी।

19) बापदादा देख रहे हैं कि बच्चे सच्चाई से अपना पोतामेल लिखते हैं। साफ दिल है, इसलिए साफ दिल मुराद हांसिल हो जाती है। जो उमंग होता है, आशायें रखते हैं वह पूरी हो जाती हैं। बच्चे, सच बोलते हैं। चाहे गिरते भी हैं तो भी सच बोलते हैं, चढ़ते हैं तो भी सच बोलते हैं। तो सच्ची दिल पर साहेब राज़ी होता है लेकिन अब ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो एक दो को देखकर सभी रेस में लग जायें। रीस नहीं रेस करें।

20) वर्तमान समय में सच्चाई और सफाई की बहुत आवश्यकता है। दिल में भी सच्चाई, परिवार में भी सच्चाई और बाप से भी सच्चाई। इसके लिए दो बातों का ध्यान देना - 1) सदा संकल्प, बोल वा कर्म में एकॉनामी का अवतार बनना। 2- बुद्धि की लाइन क्लीन और क्लीयर रखना। इसको ही बापदादा कहते हैं सच्चे दिल पर साहेब राज़ी। सच्ची दिल, साफ दिल।

21) बापदादा सभी बच्चों से क्रोध के अंश मात्र का भी त्याग कराना चाहते हैं, इसका त्याग सच्ची दिल से करो तो सच्ची दिल पर साहेब राज़ी होगा। मन्सा में भी किसके प्रति घृणा भाव का अंश न हो। घृणा वा द्वेष भाव रखने से उस आत्मा के प्रति जोश आता है, जो डिस-सर्विस का कारण बनता है इसलिए जैसे ब्रह्मचर्य के ऊपर अटेन्शन देते हो, ऐसे हर आत्मा के प्रति शुभ भाव, प्रेम भाव इमर्ज रहे। कभी मूड ऑफ न हो। कभी कोई की बात को ठुकराओ नहीं।

22) वर्तमान समय चारों ओर भय वा दु:ख का वातावरण है ऐसे वातावरण में सदा निर्भय और हिम्मतवान बनो। कोई भी दृश्य देखकर भय में नहीं आना, यह क्या हो रहा है, मर रहा है... मर वह रहा है, भय आपको आ रहा है। उस आत्मा को रहमदिल की भावना से सहयोग दो, भय में नहीं आओ। भय सबसे बड़े में बड़ा भूत है। सिर्फ मरने का ही भय नहीं होता, कई बातों का भय होता है। अपनी कमजोरी के कारण भी भय होता है। उन सबमें निर्भय बनने का सहज साधन है, साफ दिल, सच्ची दिल। तो भय कभी नहीं आयेगा, क्योंकि साहेब राज़ी तो और भी सब राज़ी।

23) बापदादा सदा कहते हैं कि जिस भी सेन्टर पर मातायें होती हैं वह सेन्टर सदा फलीभूत होता है। चाहे कमायें नहीं लेकिन दिल बड़ी होती है, भावना बड़ी होती है। तो बाप भी भावना और सच्ची दिल को पसन्द करते हैं। भोले बाप को राज़ी करने का साधन है - सच्ची दिल। सच्ची दिल बाप को क्यों प्रिय लगती है? क्योंकि बाप को कहते ही हैं सत्य। गॉड इज ट्रुथ कहते हैं ना! तो बापदादा को साफ दिल, सच्ची दिल वाले बहुत प्रिय हैं। ऐसे है ना! साफ दिल है, सच्ची दिल है। सत्यता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है।

24) बाप की हर बच्चे प्रति शुभ आशायें, शुभ उम्मींदें हैं कि आप मेरे बच्चे ही कल्प-कल्प के विजयी हो। तो निश्चयबुद्धि बन दृढ़ संकल्प करो कि विजय मेरे गले का हार है। सच्ची दिल पर साहेब मददगार है ही। सिर्फ निमित्त भाव को धारण कर हद के मैं और मेरे को त्याग, हर कदम में जमा का खाता बढ़ाते चलो तो सब बातों में विन कर नम्बरवन बन जायेंगे।

25) ज्ञानी तू आत्मा बाप को प्रिय हैं लेकिन ज्ञान के साथ-साथ सच्ची दिल, अविनाशी बाप का स्नेह आवश्यक है। अगर ज्ञान के साथ, सच्ची दिल साफ दिल का स्नेह है तो कहाँ-कहाँ मेहनत नहीं लगती। जहाँ मुहब्बत है वहाँ मेहनत नहीं। निरन्तर याद, निरन्तर लव में लीन होने वाली आत्मा पहाड़ को भी राई बनाने वाली होती है क्योंकि स्नेह में प्राप्तियां स्पष्ट अनुभव होती हैं।

26) बापदादा सच्ची दिल, साफ दिल वाली स्नेही आत्मा, लवलीन आत्मा को हर समय सहयोग देने के लिए हाज़िर रहते हैं। जो हर श्रीमत पर हाज़िर होता है तो बाप भी कहते हैं मैं हज़ूर भी हाज़िर हूँ। आप जी हज़ूर करो तो हज़ूर सदा हाज़िर है। सहज याद तो ब्राह्मण जीवन का नेचुरल गुण है।

27) बापदादा एक तो चाहते हैं सच्ची दिल, साफ दिल का स्नेह। भोलानाथ बाप सच्ची दिल पर बहुत सहज राज़ी हो जाते हैं। जब भोलानाथ राज़ी तो धर्मराज को भी बाय-बाय करके चले जायेंगे। वह भी आप बाप-समान बच्चों को नमस्ते करेगा, झुकेगा। आप ऐसे बाप के प्यारे हो लेकिन सिर्फ चेक करना, कोई स्नेह में लीकेज नहीं हो। अपने देहभान वा दूसरे की कोई भी विशेषता के प्रभाव की लीकेज खत्म।

28) कभी भी दिल छोटी नहीं करना। बड़ी दिल, बड़ा बाबा। बापदादा का स्लोगन है बड़ी दिल, सच्ची दिल, साफ दिल तो हर मुराद हांसिल। जो भी किचड़ा आवे तो उस किचड़े को अपने पास नहीं रखना। जैसे कमरे की सफाई न करो तो मच्छर हो जाते हैं, फिर बीमारियां होती हैं, ऐसे अगर मन में कोई भी बात रख ली, निकाला नहीं तो वह वृद्धि को पाती रहेगी तो मन को बीमार कर देंगी।

29) बापदादा का सभी बच्चों से प्यार है इसलिए कहते हैं कि बच्चे अपना वर्तमान और भविष्य निर्विघ्न बनाओ। संगदोष में, हद की प्राप्तियों की आकर्षण में नहीं आओ। ऐसी-ऐसी बातें समझदार बनके समाप्त करो। बापदादा मदद करेगा लेकिन सच्ची दिल, साफ दिल हो तो मुराद हांसिल, करके देखो दिल से। सच्ची दिल और मुराद हांसिल नहीं हो, यह हो नहीं सकता।

30) रोज़ रात को सोने के पहले बापदादा को गुडनाइट करने के पहले अपने सारे दिन का पोतामेल देकर अपने बुद्धि को खाली करके गुडनाइट करना और बाप की याद में सो जाना फिर आपकी नींद बहुत अच्छी होगी। यदि बाप के रूप में सारा पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो आपको धर्मराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी हो जायेगा।

31) कोई भी कमजोरी जरा सा स्वप्न मात्र भी हो, उसे दृढ़ संकल्प से बाप को दे दो तो बापदादा की एक्स्ट्रा मदद मिलेगी। सच्ची दिल से देना, ऐसे नहीं देखता हूँ, होता है या नहीं होता है! सच्ची दिल से अगर संकल्प करेंगे तो कुछ न कुछ एक्स्ट्रा मदद मिलेगी। दिल से पुरुषार्थ करेंगे तो बाप की मदद अवश्य मिल जायेगी।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"मैं और मेरे को यथार्थ स्वरूप में स्थित रह निरन्तर नेचुरल स्मृति स्वरूप बनो" (गुल्जार दादी जी 2007)

इस भट्ठी में आप सबने नेचुरल बाबा की याद का अनुभव किया होगा क्योंकि यहाँ हम सबको भिन्न-भिन्न प्रकार की मदद मिल रही है। एक तो मधुबन का वायुमण्डल ही ऐसा है, दूसरा संगठन की शक्ति भी कम नहीं होती है। चाहे नम्बरवार हो लेकिन संगठन का संकल्प तो एक ही होता है कि योग में बैठना है और फिर क्लासेज़ भी सुनते रहते हैं, तो यहाँ मदद है। लेकिन इस मदद से जो हमें अनुभव होता है वही फिर वहाँ जाके हम प्रैक्टिस करते हैं तो नेचुरल हो जाता है।

जब भी मैं शब्द बोलते हैं तो मैं आत्मा से ही लगता है, मेरा शब्द शरीर से लगता है। बाबा ने भी बोला था कि मैं के साथ मैं आत्मा शब्द एड कर दो। और जब मेरा शब्द बोलते हो तो मेरा के साथ बाबा एड कर दो। मैं कहते ही आत्मा याद आवे क्योंकि हम हैं ही आत्मा। हमारे यह विस्मृति के संस्कार द्वापर से शुरू हुए हैं। भले सतयुग में हम आत्मा के ज्ञान के बोल-चाल में नहीं होंगे लेकिन आत्मा-स्वरूप में जो सुख-शान्ति, पवित्रता है, उसके प्रैक्टिकल स्वरूप में तो होंगे। लेकिन उसके बाद 63 जन्म हमारे यह संस्कार उल्टे काम करने लगे यानि मेरे को ही मैं समझने लगे। वास्तव में ओरीज्नल मैं हूँ ही आत्मा, इसको बार-बार चेक करके चेन्ज करना पड़ेगा क्योंकि बहुत समय विस्मृति के संस्कार पड़ गये हैं, उल्टी याद इतनी पक्की हो गयी है जो वो नेचुरल काम करता है। तब बाबा कहते हैं बार-बार यह स्मृति-स्वरूप बनो। स्मृति करो नहीं, मन में सिर्फ सोचो नहीं कि मैं आत्मा हूँ, हूँ लेकिन उस स्वरूप में स्थित हो जाओ और हमारी यह नेचुरल नेचर बन जाये, मैं कहते ही आत्म-स्वरूप की स्मृति आ जाये। इसके अभ्यास के लिए बाबा ने समय प्रति समय भिन्न-भिन्न युक्तियाँ बताई हैं।

देखा गया है कि जो काम करते हैं उसी में एक्शन कॉन्सेस ज्यादा होने कारण, उसी संकल्प में ज्यादा रहते हैं। लेकिन हम सिर्फ कर्म-कर्ता नहीं हैं, हम कर्मयोगी हैं। कर्मयोगी माना कर्म और स्व-स्वरूप की स्मृति अर्थात् योग साथ में है। तो कर्मयोगी की प्रैक्टिस बढ़ाने के लिए बीच-बीच में चेक करो और चेन्ज करो। हमें बाबा का डायरेक्शन है कि हर कर्म याद में करो। तो हमारी नेचर ऐसी होनी चाहिए जो मैं कौन हूँ... इसी भिन्न-भिन्न स्मृति-स्वरूप के नशे में हम रहें। और मैं आत्मा हूँ, यह नेचुरल हो सकता है। ''मैं आत्मा हूँ'' यह स्मृति ऑटोमेटिकली बाबा की याद दिलायेगी क्योंकि आत्मा का कनेक्शन सीधा परमात्मा से है इसलिए इस बात पर अटेन्शन दें तो योग नेचर वा नेचुरल होता जायेगा। लेकिन हमें इस संगम समय में मायाजीत बनकर रहना होगा। साक्षीदृष्टा होके कोई भी समस्या या माया के खेल को देखते रहो तो वो भी एक मनोरंजन का रूप हो सकता है।

जब हम ज्वालामुखी की श्रेष्ठ स्थिति में होते हैं तो हमारी मन्सा द्वारा हर आत्मा को जो भी शक्ति चाहिए, आत्मिक प्यार चाहिए, किसको आशीर्वाद चाहिए, किसको सहनशक्ति चाहिए, किसको सुख चाहिए, किसको शान्ति चाहिए, किसको खुशी चाहिए... तो वो सब उन्हें स्वत: ही प्राप्त हो सकता है। हमारी वो ज्ञानसूर्य (मास्टर सर्वशक्तिवान) की स्टेज होने कारण ऑटोमेटिकली मुझ आत्मा द्वारा बाबा अपना कार्य कराता है। इस अवस्था तक पहुँचने के लिए हमें अपने ऊपर ही अटेन्शन देने की जरुरत है। यह संकल्प उत्पन्न हो कि मैं कौन और कैसी आत्मा हूँ और किसकी आत्मा हूँ और क्या करना है मुझे? यह हमारा कार्य ऑटोमेटिकली चलता रहता है। तो हम सभी यहाँ से जाते हुए इस अभ्यास के अनुभवी बनें क्योंकि हम सब निमित्त, विशेष सेवा के साथी बच्चे हैं। तो हमको जो बाबा ने टाईटल दिया है, उसी अनुसार हम इसी लक्ष्य और उसी स्मृति में रहेंगे और अपना काम करते हुए आगे बढ़ते रहेंगे। समय अनुसार अभी तीव्र पुरुषार्थ करो तो हम समझते हैं, बाबा जो हमारे से चाहते हैं वही स्वरूप में हम बाबा को अपना चित्र दिखा सकेंगे।

बाबा की मीठी-मीठी बातें सुन करके सबके दिल में, मन में, बुद्धि में इस समय कौन है? बाबा। और बाबा शब्द आता है तो मेरा बाबा पहले आता है क्योंकि मेरा कहने से अधिकार होता है और बाबा ने भी हमें मेरा कहके अपना अधिकार हमारे ऊपर भी रख दिया। तो हम अधिकारी हैं, बाबा के खज़ाने के बालक सो मालिक हैं। जब भी संगठन में बैठते हो, आपस में जिस समय लेन-देन करते हो माना अपना विचार देते हो, उस समय अपने को मालिक समझ करके लेन-देन करो। एक बार विचार देने के बाद जब फाइनल हो जाता है उस समय सिर्फ बालक बन जाओ। तो संगठन में हम सक्सेस तब हो सकते हैं जब बालक और मालिकपन के बैलेन्स में रहना जानते हैं। ''बालक सो मालिक हूँ'' अगर बुद्धि में यह रखें तो हमारा संगठन जल्दी-जल्दी बातों को फाइनल कर देगा। नहीं तो जिस बात के लिए हम संगठन करते हैं वो फाइनल नहीं कर सकते हैं इसलिए जब भी संगठन करो तो एक मन्त्र याद करो - बालक सो मालिक। ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी के अनमोल वचन (धारणायुक्त क्लास)

क्यों, क्या को छोड़ अपने स्वमान की सीट पर सेट रहना यही याद का सरल उपाय है (2006)

आज बाबा ने याद में रहने के लिए बड़ा सहज और सरल उपाय बताया है। याद में बैठते मक्खी मच्छर आता है तो क्या करें? जरूर भगायेंगे ना। परन्तु याद तो नहीं छोड़ेंगे, याद तो अच्छी रहे। कुछ भी होता है जरा भी अपसेट न हों। सीट अच्छी मजबूत है, सीट पर सेट हैं तो कोई बात आई, ऐसे नहीं - यह क्यों होता है? यह कहा तो मच्छर बड़ा हो गया, मैं कमजोर हो गई इसलिए मच्छरों सदृश्य आत्माओं का काम है काटना, मच्छर पैदा भी होते हैं किचड़े से। कौन सी आत्मायें मच्छरों सदृश्य जायेंगी? जो किचड़े से पैदा होती हैं और काटना जिनका काम है। क्यों, क्या में आये माना समय गंवा रहे हैं।

योग की अच्छी सहज विधि है, क्यों क्या में न जायें। योग लगायें या जो हमारे माता-पिता, सखा, शिक्षक हैं, उनके साथ रहने का मजा लें, साथ में रहने का फायदा लें। सर्व सम्बन्ध एक के साथ हो।

बाबा ने हमारी मां बाप बनकर पालना की है, बाबा हमारा हर प्रकार से मन और तन का ख्याल करता है। वह कभी स्वामी बनकर बैठा नहीं है। कमाल है मेरे बाबा की, जो इतनी शक्ति भर दी है। बाबा ने इतना सिखाया है, वह जो फाउण्डेशन पुराना मजबूत हुआ है। वह इतना अच्छा है। हम बाबा के मुख वंशावली बच्चे हैं, हमारी स्थिति कैसी हो?

जो बीच भंवर में फंस जाते हैं, उससे निकलने के लिए संगठन हुआ है। सिर्फ सेवा का प्लैन बनाने के लिए नहीं। सेवा क्या है? शुरू में जो बाबा ने नशा चढ़ाया, वह नशा सेवा करा रहा है। बाबा ने कभी एक जगह बैठने नहीं दिया, आज दिन तक, ऐसा मस्ताना बनाया है। कोई पंछी डाल को पकड़कर बैठ जाये, शोभता नहीं। बाबा कहे बच्ची उड़ती रहो, उड़ाती रहो। धर्म पिताओं का भी पिता हमारा बाबा है, वह एक है, हम सभी लाखों करोड़ों में से एक हैं। नूरे रत्न हैं। बाबा के नूर में बैठा हुआ रत्न हैं।

योग लगाओ तो कैसे? एक भूत पुजारी होते हैं, वह खतरनाक होते हैं, डराने वाले होते हैं। दूसरे होते हैं शक्तियों की पूजा करने वाले। हमारे में जरा भी देह-अभिमान है, कोई भी व्यक्ति, वैभव, स्थान स्टूडेन्ट.. में बुद्धि फंसी है तो यह भी भूत पूजा हो गई, इससे पावन बनने की शक्ति नहीं आ सकती। वायुमण्डल श्रेष्ठ नहीं बन सकता। देवताओं का तो दर्शन करने से भक्त प्रसन्न हो जाते हैं। नौधा भक्तों को कुछ चाहिए नहीं, सिर्फ दर्शन चाहिए। तो हम ऐसे दर्शनीय मूर्त बनें।

तो संगठन में पता चलता है कि कहाँ तक पुरुषार्थ किया है, अभी क्या करना है? समय कहता है, अब जो करेंगे वही साथ चलेगा। एक तरफ बाबा का साथ, दूसरा समय का साथ, तीसरा संगठन का साथ। पता नहीं आगे चल प्लेन बन्द हो जाएं, आना जाना बंद हो जाए, तो क्या हाल होगा। तो भाग्य से ऐसा संगठन मिलता है, इसका पूरा लाभ लेना चाहिए। अच्छा।

प्रश्नः- प्लैन को प्रैक्टिकल में कैसे लायें?

1- जो साक्षी होकर पार्ट प्ले करता है वो न्यारा और परमात्म प्यार की शक्ति से लाइट माइट हो जाता है। यह कोई प्लैन नहीं है, लेकिन प्रैक्टिकल है।

अपसेट होने की आदत नहीं है पर सब खुश रहें, यह ध्यान जरूर है। बाबा के घर में जो भी आवे खुश होके जाये, यह भावना हमेशा रही है। कोई भी चीज़ मेरी नहीं हैं। इससे आत्मा बाबा का प्यार खींचने की पात्र बनी है। अपनी निजी शक्ति सेवा और सम्बन्ध में बढ़ती रहे, खर्च न हो, यह कोशिश रहती है। देह-अभिमान का अंश भी होगा तो मार्क्स कम हो जायेंगी। अगर सच्चा पुरुथार्थी हूँ तो फुल मार्क्स हों। पालना, पढ़ाई, प्राप्तियां जो मिली हैं वो हमारे चेहरे और चलन में अगर नहीं हैं तो शान नहीं है।

2- प्लैन बनाने वाले बाबा के बच्चे बहुत बैठे हैं। अच्छा प्लैन बनाकर हमको देते हैं। हमें बुद्धि को शान्त प्लेन रखना है। ड्रामा में सब हुआ पड़ा है, बाबा कहता भी है अगर ब्रह्मा बाबा से भी कुछ हो गया तो बाबा ठीक कर देगा। पर हमको अपनी मनमत शामिल नहीं करनी है।

कुछ भी बात सामने आ जाये अन्दर रेडी रहें, बाबा कहता बच्ची सब ठीक हो जायेगा। ये मीठे बाबा के बोल हैं, बच्ची हो जायेगा। बाबा के बोल में इतनी शक्ति है तो मैं क्यों कहूँ - कैसे होगा, कौन करेगा! आज दिन तक यह खेल देखा है। बाबा कैसे करता कराता है, यह खेल देखा है, यही है प्रैक्टिकल प्लान।

टीचर्स बहिनें ध्यान दें

प्यारे ब्रह्मा बाबा की स्मृतियों का जनवरी मास हम ब्राह्मण परिवार के लिए अपनी अव्यक्ति स्थिति बनाने व योग के गहन अनुभव करने का मास है। इसके लिए देश विदेश की स्व-उन्नति निमित्त एक छोटे ग्रुप ने आपस में विचार विमर्श किया कि इस पूरे मास को हम सभी विशेष साइलेन्स व मौन मास वा तपस्या मास के रूप में मनायेंगे, इसके लिए दादी प्रकाशमणी जी का एक बहुत प्रेरणादाई क्लास आज आपके पास भेज रहे हैं, जिसमें दादी जी ने कहा है कि बाबा और दादी यही चाहते हैं कि पूरा ब्राह्मण परिवार एक ही दृढ़ संकल्प के साथ तपस्या करे। बाहरी सेवाओं पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाए स्वयं को शक्तिशाली बनाने के लिए अशरीरी बनने का विशेष अभ्यास करे। दादीजी ने 101 दिनों तक विशेष अन्तर्मुखी रहने वा तपस्या करने की प्रेरणा दी है। लेकिन अभी हम जनवरी महीने के 31 दिनों तक यह अभ्यास करेंगे। वह क्लास आपके पास भेज रहे हैं, सभी इसे अवश्य पढ़ें तथा अपने सेवाकेन्द्र पर क्लास में भी पढ़कर सुनायें। यह विशेष जनवरी मास की पूर्व तैयारी के लिए है:-

"अव्यक्त मास तीन तरीके से मनाया जाए"

1) अव्यक्त वर्ष के लिए अव्यक्त मुरली - जनवरी के 5 रविवार को हम बापदादा की 1993 की अव्यक्त मुरलियां पढ़ेंगे व सुनेंगे, जिसमें बापदादा ने अव्यक्त वर्ष मनाने के लिए अनेक शिक्षाओं से हम सबका श्रृंगार किया है। उन मुरलियों पर पहले 5 वरिष्ठ योगी अभ्यास एवं प्रयोग करेंगे। उनके अनुभवों का रिकार्डिंग सर्व सेवाकेन्द्रों पर पहले से ही भेजा जायेगा, जिसके आधार पर सभी अभ्यास कर सकेंगे।

2) मौन का अभ्यास – प्रत्येक रविवार की अव्यक्त मुरली और वरिष्ठ योगियों के अनुभव सुनने के बाद, निमित्त टीचर्स बहिनें अपनी क्लासेज में सभी बी.के. परिवार को एवं टीचर्स बहनों को अपनी अव्यक्त स्टेज बनाने अथवा स्वयं पर उसका प्रयोग करने के लिए मौन में रहने की प्रेरणा देंगी तथा उन्हें प्रोत्साहित करेंगी।

3) अव्यक्त इशारे – प्रतिदिन क्लास में पढ़े जाने वाले अव्यक्त इशारे भी हमें पुरुषार्थ के लिए एक और नया तरीका प्रदान करते हैं। जनवरी मास के लिए ''एकान्त और एकाग्रता'' विषय पर अव्यक्त इशारे आपके पास पत्र-पुष्प में भेजे जायेंगे, जो हमारे मौन अभ्यास को और बढ़ायेंगे।

सभी निमित्त टीचर्स से विशेष अनुरोध है कि अव्यक्त मास में गहन अनुभूति करने के लिए सभी को उमंग-उत्साह दिलायें, जिससे सभी शक्तिशाली अव्यक्त स्थिति का अनुभव कर सकें। जनवरी के करीब आते ही हम और विस्तृत जानकारी भेजेंगे।

बाबा की प्यार भरी याद में,

बी.के. राजू

(योग का प्रयोग करने वाली साइलेन्स टीम)

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

अशरीरी स्थिति का अनुभव करने के लिए अन्तर्मुखी बन योग की गुफा में चले जाओ

(नये वर्ष में 101 दिन के लिए मौन में रहने की शुभ प्रेरणायें)

बाबा कहते बच्चे, अब अशरीरी बनो, अन्तर्मुखी बनो, जिससे यह देह का भान भूल जाए, देही-अभिमानी बन जाएं। हम सबका लक्ष्य है कि हमें कर्मातीत बनना है तो जरूर यह स्थिति बनानी है। जैसे साकार बाबा ने इसी अभ्यास से सम्पूर्णता को प्राप्त किया। जब भी बाबा के कमरे में जाओ तो ऐसे लगता कि बाबा इस देह से परे हो बैठा है। बाबा एक सेकण्ड में डीप साइलेन्स का अनुभव करा देता। बाबा से कोई बात पूछते तो बाबा एक शब्द में भी सब जान लेते और बहुत शार्ट में उत्तर देते

उसे डीप साइलेन्स का अनुभव करा देते। ऐसे अनुभव होता जैसे बाबा अव्यक्त वतन वा मूलवतन में बैठे हैं। दृष्टि भी देते यही अनुभव होता कि बाबा हमें भी मूलवतन में ले जा रहे हैं।

समय प्रमाण बाबा अभी हम बच्चों को भी यही इशारा कर रहे हैं कि बच्चे, तुम्हें भी यह अभ्यास करना है। अशरीरी भव! यह अभ्यास इतना गहरा हो जो आत्म-अभिमानी बन जायें। ऐसे साइलेन्स में रहो जो कोई भी सामने आये तो वह भी आपकी साइलेन्स की शक्ति से देह के भान को भूल जाये। इसके लिए आत्मा भाई-भाई हूँ, यह अभ्यास पक्का करना है। अब ऐसी शान्ति की, गहरे योग की अनुभूति सबको करनी है।

हमारी यही भावना है कि सभी भाई-बहिनें आने वाले नये वर्ष में विशेष योग का अभ्यास, साइलेन्स का अभ्यास, आवाज से परे जाने का अभ्यास, अशरीरी बनने का अभ्यास करें। अब बाहरमुखता के वातावरण को बन्द करके अन्तर्मुखी बनने का, डेड साइलेन्स में रहने का विशेष अटेन्शन दो। इससे जो भी स्वयं की स्व स्थिति में, संगठन में अथवा यज्ञ में छोटे-मोटे विघ्न आते, वातावरण होता, वह समाप्त हो जायेगा। इसके लिए अब एक-दूसरे को योग के वायब्रेशन्स दो, स्नेह के वायब्रेशन्स दो। प्यारे बाबा के प्यार में खो जाने का वातावरण बनाओ। भल और कोई चिंता न हो, पर अपनी उन्नति की चिंता सबको जरूर करनी है। खाते-पीते, चलते-फिरते, कर्म करते, सोते-जागते अब यही धुन लगी रहे कि मुझे कर्मातीत बनना है। सम्पन्न और सम्पूर्ण बन बाप समान अव्यक्त वतनवासी बनना है। बाबा अभी बच्चों को अन्तिम घड़ियों की वारनिंग दे रहा है। यह अन्तिम पुराने शरीर भी कब तक? यह पुरानी दुनिया भी कब तक? तो परचिंतन में, तेरी-मेरी बातों में अब टाइम वेस्ट नहीं करना है। हम सब बाबा तेरे पर बलिहार हो गये, तो हमारे लिए यह पुरानी दुनिया मरी पड़ी है। न हम दुनिया के हैं, न दुनिया हमारी है। हम दुनिया को पैगाम देने वाले पैगम्बर हैं। और कोई से किसी भी प्रकार का बंधन नहीं है। सभी को पैगाम देना, सन्देश देना... बाबा ने हम बच्चों को यह सेवा की ड्यूटी दी है लेकिन स्व-उन्नति के लिए बाबा ने कहा है हे बच्चे, तुम हो बेहद के वैरागी, बेहद के त्यागी और बेहद के तपस्वी। तुम राजऋषि, राजयोगी हो। एक बाबा के सिवाए तुम्हारा कोई नहीं।

तुम बाबा के प्राण हो, बाबा तुम्हारे प्राण हैं और कोई नहीं। तो हमारा दोस्त भी खुदा दोस्त है। हम सब ईश्वरीय फैमिली के हैं, हमारा कोई पर्सनल दोस्त नहीं। जब एक दो को दिल का दोस्त बना देते हैं तब अनेक विघ्न आते हैं। ऐसे दोस्त जो व्यर्थ बातों की लेन-देन करते, हंसी-मजाक करते, परचिंतन-परदर्शन करते इससे सिद्ध होता कि उनका दिलवर खुदा दोस्त नहीं है।

हम योगियों को कौनसा मनोरंजन चाहिए? मैं समझती हूँ हमारा मनोरंजन बाबा है। बाबा के कमरे में जाओ, रूहरिहान करो। ज्ञान की आपस में मीठी-मीठी रूहरिहान करो। मुरली दोहराओ, प्रश्न करो, विचार सागर मंथन करो – यही हमारा मनोरंजन है। बाकी टी.वी.देखना, करना यह कोई हमारा मनोरंजन नहीं है। यह भी बहुत बड़ी माया है। इससे न योग लगता, न ज्ञान बुद्धि में बैठता। कितना संगम की यह अनमोल घड़ियां व्यर्थ जा रही हैं इसलिए हे ब्राह्मण बाबा के बच्चों, अब इस टी.वी. अथवा टीबी की बीमारी से मुक्त हो जाओ।

हमें तो बार-बार दिल में यह संकल्प आता कि हरेक यह व्रत जरूर ले कि कम से कम हम 101 दिन मौन व्रत रखेंगे। सेवायें तो न बन्द हुई हैं, न होंगी। जरूरी सेवायें करेंगे, बाकी मौन में रहेंगे। तो मैं हर एक से रिक्वेस्ट करती हूँ कि सभी कम से कम 101 दिन के लिए यह कंगन बांधो। संकल्प लो कि

1) किसी भी कार्य में हम धीरे से धीरे, कम से कम बोलेंगे। हमारा स्लोगन है कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो, सोच समझकर बोलो और सत्य बोलो।

2) हम भगवान के बच्चे सच्चे-सच्चे सुखदेव, सुख के देवता हैं, तो हमें संकल्प से वा बोल से सबको सुख देने का ही व्यवहार करना है।

3) साइलेन्स के बन्धन में बंधकर सच्चे-सच्चे लाइट हाउस, माइट हाउस बनना है। साथ-साथ हर्षितमुख भी रहना है।

4) अभी सब योग की गुफा में चले जाओ, अन्डरग्राउण्ड हो जाओ। सभी कार्य सम्भालते हर एक का कम से कम रोज़ 4 घण्टा पावरफुल योग जरूर होना चाहिए।

5) अब हर एक अपनी आत्मिक स्थिति को बढ़ाओ। ऐसे समझो अब हमारा पुरानी दुनिया से लंगर उठ चुका है, अब हमें घर जाना है।

इस नये वर्ष में सबको विशेष योग की गुफा में, मौन भट्ठी में रहना है, याद की यात्रा में खोये हुए रहना है। अब ऐसी 101 दिन की भट्ठी हरेक स्वयं करे जिससे स्वयं भी संतुष्ट रहे, शीतल रहे और उसे देख दूसरों को भी प्रेरणा मिले ।